SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बिहार की कृषि क्रांतिः कृषि रोड मैप का मूल्यांकन, चुनौतियाँ और भविष्य की राह

सुधांशु कुमार, पीएच–डी
ग्राम हरनाथपुर, पोस्ट + थाना मैरवा, जिला सिवान, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुधांशु कुमार, पीएच–डी
E-mail : sudhanshusiwan007@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/11/2025
Revised on : 19/01/2026
Accepted on : 28/01/2026
Overall Similarity : 00% on 20/01/2026

शोध सार

यह शोध पत्र बिहार के कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनकारी विकास का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसका श्रेय मुख्य रूप से 2008 से लागू की गई कृषि रोड मैप श्रृंखला को दिया जाता है। पत्र इन रोड मैप के क्रमिक विकास, उनके उद्देश्यों और बिहार की कृषि उत्पादकता, फसल विविधीकरण और संबद्ध क्षेत्रों पर उनके प्रभाव का गहन मूल्यांकन करता है। बिहार के सकल राज्य मूल्य वर्धन में कृषि का योगदान लगभग 19.9 प्रतिशत से 24 प्रतिशत के बीच है और यह राज्य की लगभग आधी आबादी को रोजगार प्रदान करता है, जिससे इस क्षेत्र का महत्व स्पष्ट होता है। पत्र मेंSWOT विश्लेषण के माध्यम से क्षेत्र की अंतर्निहित शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों और खतरों की विस्तृत पहचान की गई है। इसके अतिरिक्त, यह कृषि रोड मैप के पूरक के रूप में कार्य करने वाली प्रमुख सरकारी नीतियों जैसे बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज –2025, मुख्यमंत्री उद्यमी योजना और PMFME योजना के प्रभाव की भी जांच करता है। अंत में, यह पत्र किसान उत्पादक संगठनों की बढ़ती भूमिका पर प्रकाश डालता है और बिहार के लिए एक स्थायी और समृद्ध कृषि भविष्य सुनिश्चित करने हेतु भविष्य की दिशा प्रस्तावित करता है।

मुख्य शब्द

कृषि–आधारित उद्योग, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम उन्नयन योजना, खाद्य प्रसंस्करण, सरकारी नीतियाँ, सतत् विकास.

प्रस्तावना

बिहार, अपनी उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और प्रचुर जल संसाधनों के साथ, ऐतिहासिक रूप से एक कृषि

प्रधान राज्य रहा है। वर्तमान में, यह क्षेत्र राज्य की लगभग 49.6 प्रतिशत से 77 प्रतिशत आबादी को रोजगार देता है और अर्थव्यवस्था की रीढ़ बना हुआ है। हालाँकि, पारंपरिक कृषि पद्धतियों, कम उत्पादकता, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और बाजार संपर्क की कमी ने दशकों तक इसकी अपार क्षमता को बाधित किया। इस परिदृश्य को बदलने और कृषि को विकास के इंजन के रूप में स्थापित करने के लिए, बिहार सरकार ने 2008 में एक दूरदर्शी और बहु–आयामी पहल, ''कृषि रोड मैप'' की शुरुआत की। यह केवल एक नीति नहीं थी, बल्कि कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए एक रणनीतिक, चरणबद्ध योजना थी।

यह पत्र इस परिवर्तनकारी यात्रा का गहन विश्लेषण करता है। इसका उद्देश्य कृषि रोड मैप के विभिन्न चरणों के विशिष्ट उद्देश्यों और परिणामों का मूल्यांकन करना, आँकड़ों के माध्यम से हुई प्रगति को मापना, क्षेत्र की वर्तमान SWOT विश्लेषण करना, और एक स्थायी, लाभदायक और जलवायु–अनुकूल कृषि भविष्य के लिए एक रणनीतिक मार्ग सुझाना है।

सारणी 1: बिहार के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में क्षेत्रीय योगदान (अनुमानित)

क्षेत्र	प्रतिशत योगदान
सेवा	58.6
उद्योग	21.5
कृषि	19.9

(स्रोतः बिहार आर्थिक सर्वेक्षण, 2023–24)

1. कृषि रोड मैप का विकास और प्रभाव

कृषि रोड मैप को एक सतत और विकसित होने वाली रणनीति के रूप में लागू किया गया है, जिसके प्रत्येक चरण ने पिछले चरण की नींव पर निर्माण करते हुए नई चुनौतियों और अवसरों को संबोधित किया है।

- **प्रथम कृषि रोड मैप (2008–2012)**: इस प्रारंभिक चरण का मुख्य ध्यान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और बुनियादी उत्पादकता बढ़ाने पर था। इसने 'हर भारतीय की थाली में बिहार का एक व्यंजन' के महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण के साथ आधार तैयार किया। प्रमुख उद्देश्यों में बीज प्रतिस्थापन दर में सुधार करना, बीज उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और धान, गेहूं जैसी प्रमुख फसलों की उत्पादकता बढ़ाना शामिल था।
- **द्वितीय कृषि रोड मैप (2012–2017)**: इस चरण ने 'इंद्रधनुषी क्रांति' की अवधारणा पेश की, जिसका उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि के लिए कृषि का विविधीकरण करना था। इसमें डेयरी, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन और बागवानी जैसे संबद्ध क्षेत्रों के विकास पर विशेष जोर दिया गया। इस अवधि में दूध, अंडे और मछली के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की।
- **ततीय कृषि रोड मैप (2017–2022)**: इस चरण में मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके प्रमुख स्तंभों में प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, भंडारण, बाजार संपर्क और जैविक खेती को बढ़ावा देना शामिल था। इस चरण की एक ऐतिहासिक पहल गंगा नदी के किनारे एक 'जैविक गलियारा' का निर्माण था, जिसके तहत जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को विशेष प्रोत्साहन और सहायता प्रदान की गई।
- **चतुर्थ कृषि रोड मैप (2023–2028)**: 18 अक्टूबर, 2023 को भारत की राष्ट्रपति द्वारा लॉन्च किया गया यह नवीनतम रोड मैप, 'अगले स्तर पर कृषि को आगे बढ़ाने' के लक्ष्य के साथ तैयार किया गया है। इसके मुख्य फोकस क्षेत्र हैं, फसल विविधीकरण (पारंपरिक फसलों से उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे फल, सब्जियां और तिलहन की ओर बढ़ना), जलवायु–अनुकूल कृषि, कृषि यंत्रीकरण, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार (खेत तालाबों और सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के माध्यम से), और कृषि–प्रसंस्करण तथा मूल्यवर्धन को बढ़ावा देना।

प्रभाव का मात्रात्मक विश्लेषण इन रोड मैप्स का प्रभाव महत्वपूर्ण और मापने योग्य रहा है, जैसा कि

निम्नलिखित आँकड़ों से स्पष्ट है:

सारणी 2: कृषि रोड मैप के तहत प्रमुख उपलब्धियाँ

संकेतक	उपलब्धि
अनाज उत्पादकता	पिछले तीन रोड मैप के परिणामस्वरूप धान, गेहूं और मक्का की उत्पादकता लगभग दोगुनी हो गई है।
संबद्ध क्षेत्र विकास (2018–24)	दूध उत्पादन में 30.9 प्रतिशत, अंडा उत्पादन में 95.1 प्रतिशत और मछली उत्पादन में 45 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई।
मत्स्य पालन	8.46 लाख टन के उत्पादन के साथ राज्य मछली उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया है।
खाद्यान्न उत्पादन	प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के बावजूद, 2022–23 में 19,736 हजार टन का प्रभावशाली उत्पादन हासिल किया गया।
राष्ट्रीय मान्यता	चावल, गेहूं और मक्का में उत्पादन और उत्पादकता में असाधारण उपलब्धियों के लिए राज्य को पाँच कृषि कर्मण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

2. बिहार के कृषि क्षेत्र का विस्तत SWOT विश्लेषण

चुनौतियों और अवसरों को बेहतर ढंग से समझने के लिए बिहार के कृषि क्षेत्र का SWOT (सशक्तियाँ, कमजोरियाँ, अवसर, खतरे) विश्लेषण आवश्यक है।

सारणी 3: बिहार कृषि का SWOT विश्लेषण

श्रेणी	विस्तृत विवरण
सशक्तियाँ	➢ **प्राकृतिक संपदा:** गंगा के मैदानों की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, प्रचुर जल संसाधन (नदियाँ, चौर, मन) और अनुकूल कृषि–जलवायु परिस्थितियाँ जो एक वर्ष में तीन फसलें उगाने की अनुमति देती हैं। ➢ **मानव संसाधन:** बड़ी संख्या में मेहनती और अनुभवी किसान। ➢ **कृषि विरासत:** GI टैग प्राप्त अद्वितीय उत्पाद जैसे शाही लीची, मगही पान, कतरनी चावल, मिथिला मखाना और जरदालु आम, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रीमियम मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। ➢ **नीतिगत प्राथमिकता:** राज्य सरकार की नीतियों में कृषि क्षेत्र को उच्च प्राथमिकता दी गई है, जैसा कि कृषि रोड मैप श्रृंखला से स्पष्ट है।
कमजोरियाँ	➢ **छोटी और खंडित जोतें:** 91 प्रतिशत से अधिक किसानों का सीमांत श्रेणी में होना, जो यंत्रीकरण, ऋण तक पहुंच और पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं को बाधित करता है। ☐ बुनियादी ढाँचे का अभाव: भंडारण (कोल्ड स्टोरेज), प्रसंस्करण और विपणन के लिए अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, जिससे फसल के बाद भारी नुकसान होता है (अनाज में रू. 4,500 करोड़ और फलों–सब्जियों में रू. 2,000 करोड़ का अनुमानित वार्षिक नुकसान)। ➢ **फसल प्रणाली:** धान–गेहूं फसल चक्र का अत्यधिक प्रभुत्व, जो मिट्टी के स्वास्थ्य और भूजल स्तर को प्रभावित करता है। ➢ **प्रौद्योगिकी अंगीकरण:** आधुनिक कृषि तकनीकों, बेहतर बीजों और बाजार संबंधी सूचनाओं का किसानों तक धीमा प्रसार।
अवसर	➢ फसल विविधीकरण: उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे फल, सब्जियां, तिलहन, दालें और औषधीय पौधों की खेती की अपार संभावनाएं।

- **प्रसंस्करण और मूल्यवर्धनः** खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में निवेश को आकर्षित करके किसानों की आय में वृद्धि करना और रोजगार सृजित करना।
- **बाजार विस्तारः** GI टैग वाले उत्पादों और जैविक उत्पादों के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों का लाभ उठाना।
- **किसान संगठनः** छोटे किसानों को किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) के माध्यम से संगठित करके उन्हें एक व्यवहार्य आर्थिक इकाई में बदलना।

खतरे

- **जलवायु परिवर्तनः** बाढ़, सूखा, अनियमित मानसून और अत्यधिक गर्मी जैसी चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति, जो फसल उत्पादन को सीधे प्रभावित करती है।
- **जल संकटः** धान जैसी जल–गहन फसलों के कारण भूजल स्तर में चिंताजनक गिरावट।
- **बाजार जोखिमः** बाजार की कीमतों में अस्थिरता और उपज बेचने के लिए बिचौलियों पर अत्यधिक निर्भरता।

सारणी 4: बिहार में भूमि जोत का पैटर्न (अनुमानित)

सीमांत किसान (<1हेक्टेयर)	91 प्रतिशत
अन्य किसान (>1 हेक्टेयर)	09 प्रतिशत

(स्रोतः कृषि विभाग, बिहार सरकार)

3. प्रमुख सरकारी नीतियां और योजनाएं

कृषि रोड मैप के अलावा, कई अन्य सरकारी योजनाओं ने कृषि–औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सारणी 5: कृषि विकास को बढ़ावा देने वाली प्रमुख योजनाएं

योजना का नाम	विस्तृत प्रावधान और प्रभाव
बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन	➢ यह नीति निवेशकों को व्यापक प्रोत्साहन प्रदान करती है, जिसमें रू. 40 करोड़ तक की ब्याज छूट, 30 प्रतिशत तक की पूंजीगत सब्सिडी, और शुद्ध SGST की 300 प्रतिशत तक की प्रतिपूर्ति शामिल है।
पैकेज 2025	➢ रू. 1000 करोड़ से अधिक के निवेश पर 25 एकड़ तक की भूमि मुफ्त में आवंटित करने का प्रावधान बड़े निवेशों को आकर्षित करने के लिए एक बड़ा कदम है।
मुख्यमंत्री उद्यमी योजना	➢ यह योजना युवाओं, महिलाओं, SC/ST और EBC को नया उद्यम स्थापित करने के लिए रू. 10 लाख की वित्तीय सहायता प्रदान करती है। ➢ इसमें रू. 5 लाख अनुदान (सब्सिडी) और रू. 5 लाख ब्याज मुक्त ऋण शामिल है, जो उद्यमियों पर वित्तीय बोझ को काफी कम करता है। लाभार्थियों को अनिवार्य प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
PMFME योजना	➢ यह केंद्र प्रायोजित योजना सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के उन्नयन के लिए 35 प्रतिशत क्रेडिट–लिंक्ड सब्सिडी (अधिकतम रू. 10 लाख) प्रदान करती है। ➢ बिहार वित्तीय वर्ष 2024–25 के लिए इस योजना के कार्यान्वयन में देश में पहले स्थान पर रहा, जिसमें 10,296 ऋण स्वीकृत किए गए, जो जमीनी स्तर पर उद्यमिता को बढ़ावा देने में इसकी सफलता को दर्शाता है।
डिजिटल पहल	➢ **BIHAN ऐपः** यह ऐप किसानों को फसल निगरानी, कीट प्रबंधन, कीटनाशक उपयोग और बाजार मूल्य की जानकारी प्रदान करके निर्णय लेने में सहायता करता है।

- **प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT):** डीजल और इनपुट सब्सिडी का सीधा हस्तांतरण पारदर्शिता सुनिश्चित करता है और किसानों को समय पर सहायता प्रदान करता है। 2023–24 में, 20.93 लाख किसानों को रू. 55.50 करोड़ की डीजल सब्सिडी हस्तांतरित की गई।

4. किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) की भूमिका

बिहार में 91 प्रतिशत से अधिक किसानों के सीमांत होने के कारण, व्यक्तिगत रूप से उनके लिए बाजार में टिकना और अच्छा मूल्य प्राप्त करना लगभग असंभव है। इस चुनौती से निपटने के लिए, किसान उत्पादक संगठन (FPOs) एक शक्तिशाली समाधान के रूप में उभरे हैं। FPOs छोटे किसानों को संगठित करते हैं, जिससे उन्हें सामूहिक रूप से इनपुट खरीदने, अपनी उपज का विपणन करने और प्रसंस्करण गतिविधियों में भाग लेने की शक्ति मिलती है, जिससे उनकी मोलभाव की शक्ति बढ़ती है और बिचौलियों का उन्मूलन होता है।

केस स्टडी: चंपारण कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (CHKPCL) पूर्वी चंपारण में स्थित CHKPCL, जो लगभग 5,000 किसानों का एक संगठन है, FPO की प्रभावशीलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। COVID–19 महामारी के दौरान, जब राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन ने आपूर्ति श्रृंखलाओं को पूरी तरह से बाधित कर दिया था, तो इस FPO ने संकट को अवसर में बदल दिया।

सारणी 6: COVID–19 महामारी के दौरान CHKPCL का हस्तक्षेप

गतिविधि	विस्तृत परिणाम
बाजार संपर्क	FPO ने किसानों को उनके गांवों से 25 किमी दूर स्थित मोतिहारी बाजार से सीधे जोड़ा, जब परिवहन के सभी साधन बंद थे।
बिक्री की मात्रा	संकट के इस समय में लगभग 20,697 किलोग्राम सब्जियां और 5,026 किलोग्राम दालें सफलतापूर्वक बेची गईं, जिससे उपज को सड़ने से बचाया गया।
लाभान्वित किसान	इस पहल से लगभग 400 किसान सीधे लाभान्वित हुए, जिन्हें अन्यथा अपनी उपज का कोई खरीदार नहीं मिलता।
मुख्य प्रभाव	बिचौलियों का पूर्ण उन्मूलन हुआ, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि पूरा लाभ किसानों तक पहुंचे। इस मॉडल ने न केवल किसानों को भुखमरी जैसी स्थिति से बचाया बल्कि उन्हें संकट के समय में भी मुनाफा कमाने में मदद की।

यह सफलता दर्शाती है कि कैसे संगठित प्रयास छोटे किसानों को बाजार की अनिश्चितताओं से बचा सकते हैं और उनकी आय सुनिश्चित कर सकते हैं।

निष्कर्ष और भविष्य की दिशा

2008 से कृषि रोड मैप के कार्यान्वयन ने बिहार के कृषि क्षेत्र को ठहराव की स्थिति से निकालकर विकास के पथ पर अग्रसर किया है। उत्पादकता में वृद्धि, संबद्ध क्षेत्रों का विकास और किसान–केंद्रित नीतियों ने एक मजबूत नींव रखी है। राज्य अब केवल उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय एक समग्र मूल्य–श्रृंखला दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहा है, जिसमें प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन और बाजार संपर्क शामिल हैं। हालाँकि, छोटी जोतें, बुनियादी ढाँचे की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। भविष्य की सफलता इन चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने की क्षमता पर निर्भर करेगी। आगे की राह के लिए निम्नलिखित विस्तृत रणनीतिक प्राथमिकताएँ आवश्यक हैं:

1. **बुनियादी ढाँचे में आक्रामक निवेश:** फसल के बाद के नुकसान को कम करने के लिए कोल्ड स्टोरेज, गोदामों, आधुनिक पैक–हाउस और कृषि–प्रसंस्करण क्लस्टरों के एक सघन नेटवर्क का निर्माण करना। यह अनुमानित रू. 6,500 करोड़ के वार्षिक नुकसान को आर्थिक लाभ में बदल सकता है।

2. **FPOs को सशक्त बनाना:** केवल FPOs का गठन ही नहीं, बल्कि उन्हें वित्तीय प्रबंधन, बाजार संपर्क और तकनीकी ज्ञान में प्रशिक्षित करके उन्हें टिकाऊ व्यावसायिक उद्यमों के रूप में विकसित करना।
3. **प्रौद्योगिकी का गहन एकीकरण:** सटीक खेती (Precision Farming), ड्रोन के माध्यम से कीटनाशक छिड़काव, AI–आधारित फसल सलाह प्रणाली और किसानों को सीधे उपभोक्ताओं से जोड़ने वाले डिजिटल बाजार प्लेटफार्मों के उपयोग को व्यापक रूप से बढ़ावा देना।
4. **जलवायु–अनुकूल कृषि को मुख्यधारा में लाना:** चतुर्थ कृषि रोड मैप के अनुरूप, सूखा और बाढ़ प्रतिरोधी फसल किस्मों के विकास और वितरण में तेजी लाना, सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप और स्प्रिंकलर) को हर खेत तक पहुंचाना, और कार्बन सिंक बनाने तथा अतिरिक्त आय के लिए कृषि वानिकी को बढ़ावा देना।
5. **नीतिगत अभिसरण:** कृषि रोड मैप, औद्योगिक निवेश नीति (BIIPP) और कौशल विकास मिशन के बीच एक सहज समन्वय स्थापित करना ताकि एक संपूर्ण ''खेत से कारखाने तक'' (Farm to Factory) पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण हो सके, जो उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन को एकीकृत करता हो।

यदि इन रणनीतियों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो बिहार न केवल अपनी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है, बल्कि देश के कृषि–प्रसंस्करण केंद्र के रूप में भी उभर सकता है, जिससे लाखों किसानों के लिए समृद्धि के नए द्वार खुलेंगे।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2025) बिहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का विकास और संभावनाएं. *अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक अध्ययन जर्नल,* 7(2), 45–52।
2. इंडिया ब्रीफिंग, बिहार, भारत में निवेश: एक राज्य प्रोफाइल, इंडिया ब्रीफिंग, https://www.india-briefing.com/news/investing-in-bihar-india-state-profile/, Accessed on 14/11/2025.
3. इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक सर्विसेज, बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24 ई सारांश, Scribdhttps://www.scribd.com/document/746734567/Bihar-Economic-Survey-2023-24-Executive-Summary, Accessed on 11/11/2025.
4. क्लियरटैक्स, बिहार मुख्यमंत्री उद्यमी योजना, https://cleartax.in/s/bihar-mukhyamantri-udyami-yojana, Accessed on 16/11/2025.
5. कौशल्या फाउंडेशन, एक किसान उत्पादक संगठन, बिहार के ग्रामीणों के बीच लोकप्रिय, कौशल्या फाउंडेशन, नई दिल्ली।
6. कृषि विभाग, बिहार सरकार, हमारे बारे में, डीबीटी एग्रीकल्चर, बिहार सरकार, पटना।
7. कृषि विभाग, बिहार सरकार, चौथा कृषि रोडमैप 2023–28, बिहार सरकार, पटना।
8. गेटराइटअप, मुख्यमंत्री उद्यमी योजना बिहार 2025, गेटराइटअप, नई दिल्ली।
9. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार (2024) PMFME योजना: बिहार में कार्यान्वयन स्थिति. MoFPI, New Delhi, https://pmfme.mofpi.gov.in, Accessed on 13/11/2025.
10. द टाइम्स ऑफ इंडिया, बिहार पर अब निवेश के लिए चर्चा होती है: उद्योग मंत्री, Bennett, Coleman & Co. Ltd., New Delhi, https://timesofindia.indiatimes.com, Accessed on 15/11/2025.
11. द टाइम्स ऑफ इंडिया (2025, 9 मई) बिहार PMFME योजना के कार्यान्वयन में शीर्ष पर: मंत्री, द टाइम्स ऑफ इंडिया, Bennett, Coleman & Co. Ltd., New Delhi, https://timesofindia.indiatimes.com, Accessed on 01/11/2025.

12. द टाइम्स ऑफ इंडिया (2025, 12 सितंबर) बिहार की अर्थव्यवस्था में औद्योगिक विकास कृषि से आगेः मंत्री, Bennett, Coleman & Co. Ltd., New Delhi, https://timesofindia.indiatimes.com, Accessed on 12/11/2025.

13. न्यूज ऑन एआईआर, बिहारः राज्य सरकार ने नए बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज को मंजूरी दी, ऑल इंडिया रेडियो, नई दिल्ली, https://newsonair.gov.in, Accessed on : 15/11/2025.

14. पालित, पी. बिहार का चौथा कृषि रोड मैप (2023–2028) बिहार सरकार, पटना, भारत।

15. पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च (2023) बिहार बजट विश्लेषण 2023–24, पीआरएस इंडिया, PRS India, New Delhi, https://prsindia.org, Accessed on 15/11/2025.

16. पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च (2025) बिहार बजट विश्लेषण 2025–26, पीआरएस इंडिया, PRS India, New Delhi, https://prsindia.org, Accessed on 15/11/2025.

17. पीएम उज्ज्वला योजना, उद्यमी योजना, भारत सरकार, नई दिल्ली, https://www.pmuy.gov.in, Accessed on 15/11/2025.

18. प्रेस सूचना ब्यूरो (2021, 23 मार्च) बिहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का विकास, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, https://www.pib.gov.in, Accessed on 15/11/2025.

19. प्रेस सूचना ब्यूरो (2023, 18 अक्टूबर) भारत की राष्ट्रपति ने बिहार के चौथे कृषि रोड मैप का शुभारंभ किया, राष्ट्रपति सचिवालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, https://www.pib.gov.in, Accessed on 15/11/2025.

20. बीपीएससी कॉन्सेप्ट वाला (2024) बिहार आर्थिक सर्वेक्षण, अध्याय 7, कृषि और संबद्ध क्षेत्र, बीपीएससी कॉन्सेप्ट वाला, पटना।

21. बीपीएससी कॉन्सेप्ट वाला (2025, अप्रैल) बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25, अध्याय 15, दृष्टिकोण और नीति, बीपीएससी कॉन्सेप्ट वाला, पटना।

22. माईस्कीम (2023) मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना, भारत सरकार, MSME मंत्रालय, नई दिल्ली।

23. रूमी, एफ. (2024, 3 दिसंबर) बिहार का खाद्य प्रसंस्करण उछालः 2,181 करोड़ रुपये के निवेश से 4,175 नौकरियाँ पैदा हुई, द टाइम्स ऑफ इंडिया, Bennett, Coleman & Co. Ltd., New Delhi, https://timesofindia.indiatimes. com, Accessed on 15/11/2025.

24. रूरल बिहार, कृषि रोडमैप चार और कृषि वानिकी की आशाजनक भूमिका, रूरल बिहार, पटना, https://ruralbihar.in, Accessed on 15/11/2025.

25. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार (2024) PMFME योजना मार्गदर्शिका एवं बिहार कार्यान्वयन, MoFPI, नई दिल्ली, https://pmfme.mofpi.gov.in, Accessed on 14/11/2025.

****